Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 GISRRJ | Volume 1 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

भारत छोड़ो आंदोलन में डॉ0 अनुग्रह नारायण सिंह की भूमिका

डॉ0 अजीत सिंह
इतिहास विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना

शोध सार

भारत छोड़ो आंदोलन को 'अगस्त क्रांति' के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का आखिरी सबसे बड़ा आंदोलन था, जिसका लक्ष्य भारत से ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करना था। 8 अगस्त 1942 के अखिल भारतीय कांग्रेस की बम्बई–बैठक में 'भारत छोड़ो आंदोलन' के प्रस्ताव की मंजूरी मिलने के साथ ही 9 अगस्त 1942 को गाँधीजी के आह्वान पर यह आंदोलन पूरे देश में एक साथ आरंभ हुआ। हालांकि आंदोलन के आरंभ होने के साथ ही महात्मा गाँधी सहित कांग्रेस के अनेक बड़े नेता गिरफ्तार कर लिये गए, लेकिन बिहार इस मामले में सौभाग्यशाली रहा, जहाँ अपनी गिरफ्तारी के पूर्व ही राजेन्द्र बाबू ने श्रीबाबू, अनुग्रह बाबू एवं अन्य वरीय नेताओं से परामर्श कर नेतृत्व के अभाव में संघर्ष का एक ठोस कार्यक्रम तैयार कर लिया था। 9 अगस्त को राजेन्द्र प्रसाद की गिरफ्तारी के अगले दिन ही अनुग्रह बाबू एवं श्रीकृष्ण बाबू भी गिरफ्तार कर लिये गए, लेकिन आंदोलन का जोर थमा नहीं। प्रमुख नेताओं के जेल चले जाने के बाद नेतृत्व के अभाव में लोगों के बीच से नेतृत्व उभरा, संघर्ष का कार्यक्रम तो पहले से तैयार था ही। आंदोलन के दौरान पूरे बिहार में रेल की पटरियाँ उखाड़ी गई, तार और टेलीफोन की लाईनें काटी गई, डाकघरों, रेलवे स्टेशनों, थानों तथा अन्य सरकारी इमारतों को जलाया गया तथा पुलिस पर आक्रमण किये गए। दरअसल ब्रिटिश सरकार की हिंसक कार्रवाई की प्रतिक्रिया में लोगों का गुस्सा भी हिंसक गतिविधियों में बदल गया। पटना में सचिवालय पर तिरंगा फहराने के दौरान 7 युवा छात्र शहीद हो गए। बिहार में गया, भागलपुर, सारण, पूर्णिया, शाहाबाद, मुजफ्फरपुर और चंपारण स्वतःस्फूर्त जन विद्रोह के मुख्य केन्द्र बन गए। इसी तरह बिहार के तिरहुत प्रखंड में तो दो सप्ताह तक कोई सरकार ही नहीं थी और मध्य बिहार के 80 प्रतिशत थानों पर जनता का राज हो गया था। यह अलग बात है कि इतना होने के बावजूद आंदोलन अपने 'पूर्ण स्वराज्य' के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सका,

लेकिन अनुग्रह बाबू का परिश्रम बेकार नहीं गया। भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की उल्टी गिनती शुरू हो गई और आजादी का समय नजदीक आ गया।

शब्द संकेत :

औपनिवेशिक स्वराज्य, पूर्ण स्वराज्य, सत्याग्रह, सुरक्षा–बंदी, मार्क्सवादी, साम्यवादी, साम्राज्यवादी, धुरी राष्ट्र, मित्र राष्ट्र।

परिचय :

बिहार विभूति अनुग्रह बाबू आधुनिक बिहार के निर्माता थे। वे देश के उन गिने–चुने सर्वाधिक लोकप्रिय नेताओं में से थे, जिन्होंने अपने छात्र–जीवन से लेकर अंतिम दिनों तक राष्ट्र और समाज की सेवा की। महात्मा गाँधी एवं डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद के साथ मिलकर उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान वे लगभग 22 महीने तक जेल में रहे, लेकिन गिरफ्तारी के पूर्व ही उनके परामर्श से राजेन्द्र बाबू द्वारा संघर्ष का जो कार्यक्रम बनाया गया, उस पर चलकर बिहार के लोगों ने भारत छोड़ो आंदोलन में अनेक नये कीर्तिमान स्थापित किए।

विषय–वस्तु :

पोलैंड पर जर्मनी के आक्रमण के साथ ही 1 सितम्बर 1939 ई0 को द्वितीय विश्व युद्ध आरम्भ हो गया। प्रजातंत्र की दुहाई देते हुए इंग्लैंड ने भी 3 सितम्बर 1939 ई0 को पोलैंड को बचाने के लिए जर्मनी के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। उसी दिन भारत के वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने यह घोषणा की कि भारत भी युद्ध में इंग्लैंड के साथ शामिल है, जिस पर कांग्रेस कार्यसमिति ने गहरा खेद प्रकट किया। कांग्रेस यह चाहती थी कि युद्ध के उद्देश्य को स्पष्ट किया जाए। युद्ध का उद्देश्य अगर लोकतंत्र की रक्षा करना है तो भारत में भी लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित होनी चाहिए परन्तु वायसराय के उत्तर से कांग्रेस संतुष्ट नहीं हुई और 22–23 अक्तूबर को कांग्रेस कार्यकारिणी ने अपने सारे कांग्रेसी मंत्रिमंडलों को त्यागपत्र देने का आदेश दे दिया।[1] अतः बिहार मंत्रिमंडल ने भी 31 अक्तूबर 1939 ई0 को अपना त्यागपत्र दे दिया। बिहार के उस प्रथम मंत्रिमंडल में श्री अनुग्रह नारायण सिंह वित्त तथा स्थानीय शासन के मंत्री थे।[2]

22–23 दिसम्बर की वर्धा कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में आगामी 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया और यह निर्णय लिया गया कि ''हम फिर से भारत की स्वतंत्रता हासिल करने का संकल्प दुहराते हैं एवं जब तक पूर्ण स्वराज्य प्राप्त नहीं हो जाता तब तक अहिंसात्मक ढंग से स्वतंत्रता संघर्ष चलाते रहने का प्रण करते हैं। 26 जनवरी 1940 ई0 को स्वाधीनता दिवस मनाने के सिलसिले में बिहार में सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियाँ की गई। इसके साथ ही रामगढ़ में होनेवाले आगामी वार्षिक कांग्रेस की तैयारी भी प्रारंभ हो गई। एक कार्यकारिणी समिति बनाई गई, बजट स्वीकृत किया गया और विभिन्न जिलों से चन्दे की रकम निर्धारित की गई।

अनुग्रह बाबू भी रामगढ़ में होनेवाले अखिल भारतीय कांग्रेस अधिवेशन की तैयारी में लग गए। रामगढ़ कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य को अपना लक्ष्य बतलाया तथा वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनी गई संविधान सभा द्वारा देश का संविधान बनाने पर बल दिया गया। इस कांग्रेस को सफल बनाने के लिए अनुग्रह बाबू को कठोर मेहनत करनी पड़ी। राजेन्द्र बाबू के बीमार रहने के कारण ज्यादा कार्य उन्हें ही देखने पड़े। इसके साथ ही बिहार के जिला छात्रसंघ के अधिवेशन में अनुग्रह बाबू ने अपने भाषण में छात्रों से गाँधीजी के आदेशों पर चलने की अपील की।[3]

कांग्रेस कार्यकारिणी द्वारा रामगढ़ अधिवेशन में ही गाँधीजी के नेतृत्व में अनिवार्य संघर्ष हेतु राष्ट्र को तैयार होने का आह्वान किया गया था। रामगढ़ कांग्रेस के लगभग दो सप्ताह बाद देश में राष्ट्रीय सप्ताह बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इसी दौरान गाँधीजी ने 'हरिजन' पत्रिका में अपना लेख प्रकाशित करवाया जिसमें कहा गया कि प्रत्येक कांग्रेस कमिटी अपने आपको एक सत्याग्रह समिति बनाए और प्रत्येक सत्याग्रहियों को रचनात्मक कार्यक्रम में विश्वास रखने और उसे चलाते रहने का आह्वान किया। इसी परिप्रेक्ष्य में बिहार के सोनपुर में 20 अप्रैल से एक प्रांतीय सत्याग्रह शिविर एक सप्ताह तक चलाया गया, जिसमें अनुग्रह बाबू भी शामिल हुए और वहाँ रहकर एक सप्ताह तक सत्याग्रह के सभी नियमों का पालन किया। सोनपुर शिविर प्रारंभ होने से पूर्व ही अप्रैल में देश की तरह बिहार में भी 'राष्ट्रीय सप्ताह' मनाया गया, जिसमें खादी की बिक्री पर जोर दिया गया। राष्ट्रीय सप्ताह के दौरान अनुग्रह बाबू ने औरंगाबाद के विभिन्न स्थानों का दौरा किया और लोगों को सत्याग्रह के सिद्धांत को समझाते रहे।[4] सोनपुर के बाद पटना, शाहाबाद, गया आदि कई जिलों में सत्याग्रह शिविर खोले गए, जहाँ अनुग्रह बाबू ने लोगों को सत्याग्रह के सिद्धांतों से अवगत कराया। दरअसल 1917 ई0 का चम्पारण सत्याग्रह हो या फिर 1930 ई0 का सविनय अवज्ञा आंदोलन या 1940 ई0 का व्यक्तिगत सत्याग्रह– इन सभी आंदोलनों के माध्यम से गाँधीजी जनता में जागरूकता लाना चाहते थे और इन आंदोलनों की सफलता 1942 ई0 की 'भारत छोड़ो आंदोलन' के साथ झलकता है, जब गाँधीजी अहिंसा छोड़कर हिंसा की बात करने लगते हैं– लोग पीटाकर भी आंदोलन से हटने का नाम नहीं लेते।

एक तरफ गाँधीजी के आह्वान पर जहाँ देश भर में सत्याग्रह संबंधी प्रशिक्षण चल रहा था, वहीं दूसरी ओर द्वितीय महायुद्ध की लपटें एशिया में फैल चुकी थी। जापान लड़ाई में कूद पड़ा था और उससे चीन तथा पूर्वी एशिया के लिए भारी खतरा उपस्थित हो गया था। चीन के नेता जनरल च्यांग काई शेक अपनी पत्नी के साथ भारत आए थे। उनका प्रयत्न था कि कांग्रेस नेता और गाँधीजी युद्ध में जापान का विरोध करने के लिए मित्र–राष्ट्रों की सहायता में सक्रिय योग प्रदान करें। गाँधीजी अपनी अहिंसा की मान्यता के आधार पर युद्ध में अपने देश को झोंकने के लिए कदापि तैयार नहीं थे और उन्होंने वायसराय को यह बता भी दिया था कि उनकी सहानुभूति इंग्लैंड और फ्रांस के साथ है,

लेकिन अहिंसावादी होने के नाते वे मित्र–राष्ट्रों का केवल नैतिक समर्थन ही कर सकते हैं। दूसरी ओर वामपंथी समूहों का कहना था कि यह युद्ध साम्राज्यवादी युद्ध है और यही वह मौका है जब ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ चौतरफा युद्ध छेड़कर आजादी हासिल कर ली जाए। गाँधीजी युद्धकाल में सरकार को परेशान करना नहीं चाहते थे, लेकिन जब उन्होंने यह देखा कि ब्रिटेन का दिल भारत के प्रति नरम होने की बजाय और भी कठोर होता जा रहा है तो उन्होंने जनसाधारण के धैर्य की और परीक्षा न लेकर चुने हुए लोगों के द्वारा व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू करने का फैसला किया।

17 अक्तूबर 1940 ई0 को सत्याग्रह संग्राम प्रारम्भ हो गया। उस दिन पहले सत्याग्रही श्री विनोबा भावे ने यह प्रतिज्ञा दोहराते हुए सत्याग्रह किया, ''जन या धन से ब्रिटेन के युद्ध प्रयत्न में सहायता देना गलत है। युद्ध का एक मात्र उपचार युद्ध मात्र का अहिंसात्मक प्रतिरोध के द्वारा मुकाबला करना है।'' व्यक्तिगत सत्याग्रह में बिहार ने तत्क्षण भाग लिया। 28 नवम्बर 1940 ई0 को बिहार में व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया गया। गाँधीजी ने राजेन्द्र बाबू को उनकी अस्वस्थता के कारण सत्याग्रह में भाग लेने से मना कर दिया। अतः राजेन्द्र बाबू द्वारा श्रीकृष्ण सिंह और अनुग्रह नारायण सिंह प्रथम दो सत्याग्रही चुने गए।[5] बाबू श्रीकृष्ण सिंह सबसे पहले सत्याग्रही थे, जिन्हें प्रशासन ने बाँकीपुर से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। 2 दिसम्बर को पटना सिटी में एक सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें अनुग्रह बाबू ने लोगों को सत्याग्रह का महत्व समझाया और उनके अहिंसक बने रहने की परम आवश्यकता बताई।[6] लेकिन, 3 दिसम्बर को सत्याग्रह प्रारंभ करने से पहले ही अनुग्रह बाबू को पटना सिटी में भाषण करने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया।[7] अनुग्रह बाबू पर पटना में मुकदमा चला और कुछ दिनों बाद उन्हें पटना के जेल से हजारीबाग जेल स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ 26 अगस्त 1941 ई0 तक उन्हें जेल में गुजारने पड़े।

दिसम्बर 1941 में असम, बंगाल, विशाखापत्तनम पर जापानी वायुसेना के सक्रिय होने के बाद भारत पर युद्ध के बढ़े हुए खतरे को देखकर कांग्रेस ने व्यक्तिगत सत्याग्रह को निलंबित कर दिया। आगामी युद्ध के खतरे से भारत की रक्षा कैसे होगी यह भारत के राष्ट्रीय नेतृत्व की सर्वाधिक चिन्ता का विषय बन गया। फरवरी 1942 ई0 में बिहार प्रांत के नेतृत्व करने वाले कांग्रेस नेताओं को गाँधीजी द्वारा वर्धा बुलाया गया। जिस प्रकार अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी महात्मा गाँधी के रचनात्मक कार्यक्रमों को चलाती है उसी तर्ज पर प्रांतीय कांग्रेस कमिटी को भी एकाग्र होकर गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों को चलाने के लिए प्रस्ताव पास किया गया। उसी तर्ज पर अनुग्रह बाबू ने 'सेवा–दल' नामक संगठन बनाया, जो कांग्रेस के दिशा–निर्देश पर कार्य करती।[8] इसमें लोगों को आवश्यकता पड़ने पर सहायता करने और आतंक दूर करने के लिए स्वयंसेवकों को घूम–घूमकर काम करना था। दूसरी ओर धुरी राष्ट्रों के लगातार विजय एवं ब्रिटेन के कई पराजय के बावजूद भी भारत के उचित राष्ट्रीय माँगों के प्रति इंग्लैंड का इरादा नेक नहीं था। हालांकि

चीन और अमेरिका द्वारा ब्रिटिश सरकार पर भारत की राष्ट्रीय माँगों को पूरा करने संबंधी दबाव बनाने के बाद 11 मार्च 1942 ई0 को ब्रिटिश संसद में प्रधानमंत्री चर्चिल ने यह घोषणा की कि वे जापानी खतरे से भारत की रक्षा करने के लिए भारत के सभी वर्गों को संगठित करना चाहते हैं। युद्ध समाप्त होने पर भारत को पूर्ण औपनिवेशिक स्वराज्य दे दिया जाएगा और भारतीय नेताओं से बातचीत करने के लिए युद्ध मंत्रिमण्डल के एक सदस्य शीघ्र ही भारत जायेंगे।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल की घोषणा के फलस्वरूप 22 मार्च, 1942 को स्टैफोर्ड क्रिप्स भारत आए। उन्होंने भारत के वायसराय, केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों तथा भारतीय नेताओं से बातचीत कर एक प्रस्ताव उपस्थित किया, जिसे क्रिप्स–प्रस्ताव कहा गया। यद्यपि इस प्रस्ताव में युद्ध के पश्चात् भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य देने की बात कही गई तथापि इससे भारतीय नेताओं को संतुष्टि नहीं हुई क्योंकि इसमें औपनिवेशिक स्वराज्य की तिथि निश्चित नहीं की गई थी। इस प्रस्ताव के अनुसार कोई राज्य या रियासत अपनी इच्छा से भारतीय संघ से बाहर रह सकता था। यही बात मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की माँग को प्रोत्साहन प्रदान करने वाला था। भारतीय नेता सुरक्षा विभाग पर अपना नियंत्रण चाहते थे। अतः इन सब कारणों से भारतीय नेताओं ने क्रिप्स–प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

कांग्रेस ने अपनी कार्यकारिणी समिति की बैठक वर्धा में 14 जुलाई 1942 ई0 को बुलाई, जिसमें भारत से ब्रिटिश शासन का शीघ्र अंत करने का निश्चय किया गया। वर्धा में जो प्रस्ताव पारित किए गए थे, उसपर विचार के लिए अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन बम्बई में बुलाया गया, जहाँ 8 अगस्त 1942 ई0 को 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' पारित किया गया।[9] प्रस्ताव के अन्तर्गत भारत से ब्रिटिश शासन को अविलम्ब समाप्त करने की माँग की गई। भारत की स्वतंत्रता की घोषणा होने पर एक अस्थायी सरकार स्थापित की जाएगी, जिसका प्रथम कर्तव्य अपनी समस्त शक्तियों द्वारा मित्र–राष्ट्रों से मिलकर भारत की रक्षा करना तथा आक्रमण का विरोध करना होगा। ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रस्ताव को अस्वीकृत करने पर समिति ने सर्वाधिक व्यापक स्तर पर गाँधीजी के नेतृत्व में अहिंसात्मक संघर्ष आरम्भ करने की अनुमति देने का संकल्प किया। प्रस्ताव पास होने के उपरान्त गाँधीजी ने जनता को 'करो या मरो' का महामंत्र दिया। उन्होंने कहा कि,''हम या तो भारत को स्वतंत्र करेंगे या उसके लिए संघर्ष में अपने प्राणों की बलि देंगे''।[10]

'भारत छोड़ो' प्रस्ताव के स्वीकृत होने के बाद महात्मा गाँधी, मौलाना अबुल कलाम आजाद, सरोजिनी नायडू, विनोबा भावे तथा अन्य नेता गिरफ्तार कर लिए गए तथा देश भर में वृहत् पैमाने पर गिरफ्तारियाँ प्रारम्भ हुई। अपनी गिरफ्तारी के समय गाँधीजी ने राष्ट्र के नाम एक संदेश प्रसारित कर लोगों से अपील की, कि लोग अपने को आजाद समझे, पूर्ण हड़ताल तथा अन्य अहिंसात्मक तरीकों से सरकारी प्रशासन को ठप्प कर दें तथा मरकर भी राष्ट्र को जिन्दा

रखें।[11] गाँधीजी ने यहाँ तक मान लिया कि जनता आत्मरक्षा के लिए हथियार भी उठा सकती है। अधिक ताकतवर और हथियारों से लैस आक्रमणकारी के विरूद्ध शस्त्र उठाने को अहिंसक कार्रवाई माना गया।[12]

बिहार में अखबारों और कुछ सूत्रों से यह मालूम हो चुका था कि सरकार आंदोलन आरंभ होने के पहले ही बम्बई में सभी नेताओं को गिरफ्तार करने की तैयारी कर रही थी। ऐसी स्थिति में जनता के समक्ष कोई संघर्ष का कार्यक्रम नहीं होगा यह सोचकर राजेन्द्र बाबू ने कम से कम बिहार के लिए एक कार्यक्रम बनाने का निर्णय किया। अनुग्रह नारायण सिंह, दीप नारायण सिंह, कृष्ण वल्लभ सहाय आदि नेताओं ने इस कार्य में राजेन्द्र बाबू को भरपूर सहयोग दिया। इस कार्यक्रम में अहिंसा पर जोर देते हुए सत्याग्रह के लिए जो कार्यक्रम बताया गया वह पूर्व के सत्याग्रहों के कार्यक्रम से सिद्धांततः भिन्न तो नहीं था, पर अधिक उग्र जरूर था। 31 जुलाई की शाम पटना के अंजुमन इस्लामिया हॉल में एक आम सभा हुई, जिसमें छात्रों से यह अपील की गई कि वे कांग्रेस के क्रांतिकारी कार्यक्रमों का अनुसरण करें। अनुग्रह बाबू ने छात्रों को आसन्न संघर्ष के लिए तैयार रहने को कहा।

अनुग्रह बाबू भी अपनी रणनीति के बारे में लिखते हैं, ''8 अगस्त को बम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक होने वाली थी। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हमलोग शीघ्र ही जेल में बंद कर दिये जायेंगे। अतएव मैंने सदाकत आश्रम वाली बैठक के बाद से ही जेल–यात्रा के लिए अपने को हर तरह से तैयार कर लेने का निश्चय किया। मेरे परिवार के लोग उस समय मेरे छोटे भाई के साथ रायबरेली में थे। रायबरेली जाकर उनलोगों से मिल लेने का विचार तय किया। और 6 अगस्त को वहाँ के लिए प्रस्थान भी कर दिया।'' 8 अगस्त को अनुग्रह बाबू रायबरेली में ही थे और वहीं उन्हें महात्मा गाँधी की गिरफ्तारी की खबर मिली। यह सुनते ही वे पटना के लिए प्रस्थान कर गए।

9 अगस्त को राजेन्द्र प्रसाद भी गिरफ्तार कर लिए गए। उनकी गिरफ्तारी से बिहार में आंदोलन का रूप काफी उग्र हो गया तथा सारे प्रांत में 'भारत छोड़ो, 'कांग्रेस जिन्दाबाद के गगनभेदी नारे सुनाई देने लगे। अनुग्रह बाबू भी 9 अगस्त की रात को पटना पहुँच गये। 11 अगस्त को सुबह–सुबह ही अनुग्रह बाबू को गिरफ्तार कर लिया गया।[13] अपनी गिरफ्तारी के बारे में अनुग्रह बाबू लिखते हैं, '' 9 अगस्त की रात में ही पटना पहुँच गया। पटना में अपने निवास स्थान पर पहुँचते ही मुझे खबर मिली कि पुलिस मेरी खोज कर रही थी। प्रातः होते ही मैं गिरफ्तार कर लिया जाऊँगा। अतएव, घर पहुँचते ही मैं जेल–यात्रा की तैयारी में लग गया.....10 अगस्त का प्रातः काल! प्राची दिशा में भगवान प्रांशु माली की क्रांतिकारी किरणों के फूटते ही पटना के तत्कालीन जिलाधीश आर्चर साहब मेरे निवास पर आ धमके और साथ चलने का संकेत किया। मैं जाने को तैयार था ही, लेकिन एकाध घंटे के लिए अवकाश की माँग की। आर्चर साहब ने मेरे अनुरोध को सहर्ष स्वीकार कर लिया। मैं झटपट अपने आस–पास के मित्रों के घर जाकर उनसे मिल

आया। मेरे पटना पहुँचने के पूर्व ही मेरे अनेक साथी गिरफ्तार हो चुके थे। मैं भी 10 अगस्त को प्रातः आठ बजे आर्चर साहब के द्वारा गिरफ्तार होकर पटना जिला–जेल में दाखिल हो गया।[14] इसी दिन श्रीबाबू भी गिरफ्तार कर लिए गए। अनुग्रह बाबू और श्रीबाबू को बाँकीपुर जेल में रखा गया, जहाँ राजेन्द्र बाबू पहले से ही कैद थे।

सरकार ने बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी तथा उसकी सहयोगी संस्थाओं को गैरकानूनी घोषित कर दिया तथा 10 अगस्त को ही पुलिस ने सदाकत आश्रम, किसान सभा कार्यालय, जिला कांग्रेस कार्यालय एवं कांग्रेस समाजवादी दल कार्यालय को जब्त कर लिया। पुलिस ने बिहार विद्यापीठ के भवन को भी जब्त कर लिया। राजेन्द्र बाबू, श्रीबाबू, अनुग्रह बाबू तथा अन्य नेताओं की गिरफ्तारी के विरूद्ध पटना के विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में पूर्ण हड़ताल रही। बी0एन0 कॉलेज, मेडिकल कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज, पटना कॉलेज, साइन्स कॉलेज, पटना ट्रेनिंग कॉलेज तथा अन्य शिक्षण–संस्थानों पर राष्ट्रीय झण्डे फहराये गये। महिलाओं ने भी एक जुलूस निकाला और कांग्रेस मैदान में भगवती देवी की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया। इस सभा में सुन्दरी देवी तथा रामप्यारी देवी ने वकीलों से उनकी वकालत छोड़ने का अनुरोध किया। 11 अगस्त 1942 ई0 के सचिवालय गोलीकाण्ड से लोग और उत्तेजित हो उठे, जिसमें पटना के विभिन्न स्कूलों व कॉलेजों के सात छात्र शहीद हो गए। अगस्त–क्रांति की ज्वालामुखी फूट पड़ी, जिसके ताप से पटना ही नहीं सारा बिहार उत्तप्त हो गया। विद्यार्थी, वकील, दूकानदार – चाहे वे हिन्दू हों या मुस्लिम सभी ने इसमें अपूर्व उत्साह के साथ भाग लिया। इस आंदोलन के दौरान पूरे बिहार में रेल की पटरियाँ उखाड़ी गई, तार और टेलीफोन की लाइनें काटी गई, डाकघरों, रेलवे स्टेशनों, थानों तथा अन्य सरकारी इमारतों को जलाया गया तथा पुलिस पर आक्रमण किए गए। ऐसा करने का एक मात्र उद्देश्य युद्धकाल में सरकार को इस तरह परेशान करना था जिससे युद्ध–सामग्री भारत के बाहर न पहुँचे सके। इस आंदोलन को दबाने के लिए सरकार ने तेजी के साथ अपना दमन–चक्र चलाया, जिसमें नेताओं की गिरफ्तारी, गोली चलाना, युवकों को कोड़े तथा बेंते मारना, सामूहिक जुर्माना तथा स्त्रियों को अपमानित करना आदि शामिल था। अगस्त–क्रांति के सिलसिले में 30 नवम्बर 1942 ई0 तक बिहार में 14478 लोग गिरफ्तार हुए और 134 व्यक्ति पुलिस की गोली के शिकार हुए।

इधर राजेन्द्र बाबू को छोड़कर अनुग्रह बाबू, श्रीबाबू एवं अन्य प्रमुख राजबंदियों को कुछ दिनों तक बाँकीपुर जेल में रखने के बाद हजारीबाग जेल में स्थानांतरित कर दिया गया। हजारीबाग सेंट्रल जेल से बाबू साहब का पुराना परिचय था। इसके पूर्व भी वे नमक सत्याग्रह और व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान यहाँ आ चुके थे। अतः इस बार भी उनका जेल–जीवन शांतिपूर्वक बीता। हजारीबाग जेल में श्री बाबू एवं अनुग्रह बाबू जैसे नेताओं को सुरक्षा–बंदी (सेक्युरिटी प्रिजनर्स) के रूप में रखा गया था। सुरक्षा–बंदी उन कैदियों को कहा जाता था, जिन्हें मात्र संदेह के आधार पर गिरफ्तार किया गया था और जिन पर मामले चलाने के लिए पर्याप्त प्रमाणों का अभाव था। सरकार ने उन्हें अनिश्चित

काल के लिए नजरबंद रखने का निश्चय किया था। उनकी भी दो श्रेणियाँ थी– क्लास 'ए' और क्लास 'सी'। बाबू साहब (अनुग्रह बाबू) एवं श्रीकृष्ण बाबू आदि बड़े नेता 'ए' श्रेणी में शामिल थे। जेल में उन्होंने आधुनिक युग की विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं पर लिखी गई पुस्तकों का अवलोकन तो किया ही, साथ ही मार्क्सवादी राजनीतिक दर्शन का विशेष रूप से अध्ययन किया।

जेल से बाहर भारत में भारत छोड़ो आंदोलन के अति उग्र रूप धारण कर लेने से महात्मा गाँधी चिंतित हो उठे, क्योंकि सरकार इसके लिए कांग्रेस को ही उत्तरदायी समझ रही थी। जब सरकार ने गाँधीजी को कांग्रेस का दृष्टिकोण स्पष्ट करने का मौका नहीं दिया तब बापू ने 10 फरवरी 1943 ई0 को पूना जेल में ही 21 दिन का अनशन आरम्भ कर दिया। फलतः गिरते हुए स्वास्थ्य को देखकर 6 मई 1944 ई0 को गाँधीजी को रिहा कर दिया गया।[15]

इधर बिहार में 1944 ई0 में कांग्रेस की गतिविधि मुख्यतः रचनात्मक कार्यक्रम तथा समाज सेवा के कार्यों तक सीमित हो गई थी। जून 1944 ई0 को अनुग्रह बाबू भी जेल से मुक्त कर दिए गए। इसके बाद उन्होंने समाज सेवा के कार्यों पर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने विशेष रूप से उत्तर बिहार के लोगों के स्वास्थ्य सुधार से संबंधित कार्यों पर ध्यान दिया। उन्होंने कोशी से आए बाढ़ के कारण उत्तरी भागलपुर और दरभंगा में हैजा और मलेरिया जैसी महामारी पर अखबारों में लेख प्रकाशित करवाए।[16] अनुग्रह बाबू ने महामारी पीड़ित इलाकों में राहत कमिटी का संगठन किया।[17] स्वयं रोगग्रस्त क्षेत्रों का दौरा कर वहाँ की दयनीय दशा देखी और पीड़ित लोगों की सहायता पहुँचाने की अपील स्थानीय धनी–मानी सज्जनों से की। मलेरिया क्षेत्रों में सहायता का कार्य चलने लगा। आवश्यकतानुसार 60 नये अस्पताल खोले गए और वहाँ दवाइयों के साथ डॉक्टर भेजे गए। बिहार के गवर्नर रदरफोर्ड को जब इस बात की आशंका हुई कि कांग्रेस के लोग रिलीफ की आड़ में राजनीतिक चालें चल रहे हैं तो अनुग्रह बाबू ने अपने तर्कों से गवर्नर को संतुष्ट ही नहीं किया, बल्कि राहत कार्य में सहायता के लिए प्रेरित भी किया। इन राहत कार्यों में अनुग्रह बाबू साम्यवादियों से बहुत प्रभावित हुए। इसी सन्दर्भ में अनुग्रह बाबू साम्यवादियों के 'फ्रेंड्स ऑफ द सोवियत यूनियन' के बिहार शाखा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।[18]

महात्मा गाँधी देश की जनता का ध्यान रचनात्मक कार्यक्रम की ओर लगाना चाहते थे। अतः उन्होंने कहा कि कार्यकर्त्ताओं को यह समझ लेना चाहिए कि रचनात्मक कार्यक्रम पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने का सत्य एवं अहिंसा का मार्ग है। उसका पूरी तरह पूरा किया जाना ही पूर्ण स्वराज्य है। जिस प्रकार सशस्त्र विद्रोह के लिए सैनिक प्रशिक्षण आवश्यक होता है उसी तरह सविनय अवज्ञा के लिए भी रचनात्मक कार्यों में प्रशिक्षण जरूरी है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कांग्रेस ने प्रांत भर के अधिकतर जिलों में सभाएँ आयोजित की। आंदोलनकारियों के परिवारों की सहायता एवं

उनके मुकदमों का खर्च जुटाने के लिए चंदा एकत्र करने हेतु जिला कमिटियों की स्थापना की गई। 23–24 दिसम्बर 1944 में गया जिला कांग्रेसकर्मी सम्मेलन किया गया, जिसकी अध्यक्षता अनुग्रह बाबू ने की।[19]

हैजा, मलेरिया तथा इस प्रकार के सहायता कार्यों के अतिरिक्त जिस प्रकार के रचनात्मक कार्यों में अनुग्रह बाबू व्यस्त थे उसका अभिप्राय वस्तुतः ग्राम–निर्माण कार्य था। अखिल भारतीय ग्रामोद्योग– सभा के संचालक होने की हैसियत से वे कुछ ऐसे केन्द्रों को स्थापित करने का विचार कर रहे थे, जिनमें ग्रामोन्नति तथा गाँवों को स्वावलम्बी बनाने की शिक्षा दी जाए।

निष्कर्ष :

स्पष्ट है कि 'भारत छोड़ो' आंदोलन में अनुग्रह नारायण सिंह की प्रभावी भूमिका रही। रामगढ़ कांग्रेस से लेकर व्यक्तिगत सत्याग्रह तक हर जगह उन्होंने बढ़–चढ़कर भाग लिया और राज्य की जनता को आंदोलन के लिए तैयार किया। मंत्रिमंडल के इस्तीफे के बाद से अगस्त क्रांति के प्रारम्भ होने तक अनुग्रह बाबू राष्ट्रीय कांग्रेस के बताए रचनात्मक कार्यक्रमों को पूरे मनोयोग से आगे बढ़ाते रहे। उन्होंने गाँधीजी के चरखे की उपयोगिता और सत्याग्रह की परिभाषा को पूरे प्रांत में फैला दिया। सबसे बड़ी बात कि इस दौरान प्रांतीय कांग्रेस कमिटी में आई शिथिलता और गुटबंदी को दूर करने का व्यक्तिगत प्रयास किया। गाँधीवादी जनांदोलन में आंदोलन की रूपरेखा नेतृत्व के द्वारा तैयार कर उसके कार्यान्वयन के लिए स्थानीय स्तर के कार्यकर्त्ताओं और जनसाधारण पर छोड़ दिया जाता था, लेकिन 1942 ई0 में यह रूपरेखा भी स्पष्ट नहीं हो सकी थी, क्योंकि नेतृत्व को आंदोलन छेड़ने का अवसर ही नहीं मिला। बिहार इस मामले में सौभाग्यशाली रहा, जहाँ आंदोलन की शुरूआत के पूर्व ही राजेन्द्र बाबू के निर्देशन में अनुग्रह बाबू ने आंदोलन का एक कार्यक्रम तैयार कर लिया था। 'भारत छोड़ो' आंदोलन के दौरान उन्हें लगभग 22 महीने तक जेल में रहना पड़ा। जेल से मुक्त होने के बाद उन्होंने समाज सेवा का दायित्व संभाला और उत्तर बिहार में महामारी के रूप में फैले हैजा व मलेरिया से निपटने में जी–जान से लग गए। इस प्रकार आंदोलन के पूर्व से पश्चात् तक अपने त्याग और बलिदान से उन्होंने देश के स्वाधीनता का मार्ग तो प्रशस्त किया ही, राजनीतिक पीड़ितों और महामारी पीड़ितों की सेवा कर मानवता की भी रक्षा की।

संदर्भ सूची :

1. दत्त, के0के0, बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास, खण्ड–2, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1998, पृ0 332
2. बिहार सरकार, नियुक्ति विभाग, फाईल संख्या ई0सी0–8/1937, बिहार राज्य अभिलेखागार, पटना।
3. दत्त, के0के0, पूर्वोक्त, पृ0 343
4. बिहार सरकार की पाक्षिक रिपोर्ट, अप्रैल, 1940
5. सिंह, अनुग्रह नारायण, मेरे संस्मरण, बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय, पटना, 2012, पृ0 265
6. वही, पृ0 267
7. दत्त, के0के0, पूर्वोक्त , पृ0 374
8. द इंडियन नेशन, पटना, 31 मार्च 1942
9. श्रीवास्तव, एन0एम0पी0, बिहार में राष्ट्रीयता का विकास, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना 1998, पृ0 132
10. दत्त, के0के0 बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास, खण्ड–3, बिहार, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1999, पृ0 28
11. कांग्रेस रिस्पान्सिविलिटी फॉर दि डिस्टर्बेंस (1942–43), भारत सरकार, नई दिल्ली, 1943, पृ0 80
12. हरिजन, अहमदाबाद, 29 मार्च, 1942
13. पुलिस अधीक्षक, पटना द्वारा 12 अगस्त 1942 को डी0आई0जी0 बिहार को प्रेषित गोपनीय रिपोर्ट, पॉलिटिकल स्पेशल फाईल संख्या–70/1942, बिहार राज्य अभिलेखागार, पटना
    (सरकारी रिपोर्ट में अनुग्रह बाबू की गिरफ्तारी की तिथि 11 अगस्त दर्ज है)
14. मेरे संस्मरण, पृ0 317
15. श्रीवास्तव, एन0एम0पी0, पूर्वोक्त, पृ0 155–56
16. बिहार सरकार की रिपोर्ट, 21 जुलाई, 1944
17. दत्त, के0के0 पूर्वोक्त, पृ0 290
18. बिहार सरकार की पॉलिटिकल रिपोर्ट, 4 अगस्त, 1944
19. दत्त, के0के0, पूर्वोक्त, पृ0 302